न्यूज़लेटर जुगनू –

जुगनू एक छोटा सा कीट है जो कि रोशनी पैदा करता है। ऐसी रोशनी जो अवरक्त व पराबैगनी किरणों से मुक्त होता है इसलिये हानिकारक नहीं है। एक जुगनू की रोशनी कम होती है, पर बहुत सारे जुगनुओं की रोशनी मिला दी जाएं तो उजाला हो जाता है। बच्चे भी बिल्कुल जुगनू की तरह हैं, हर बच्चे में अपनी तरह का एक प्रकाश होता जिससे वे अपने आसपास को रोशन करते हैं। सामूहिकता और सहभागिता बच्चों की इस रोशनी को और तेज करती है। बच्चों की हर गतिविधि जुगनू की तरह अहानिकारक व रोशन करने वाली होती है। इसीलिये हम इस न्यूज़लेटर का नाम जुगनू दे रहे हैं।

जुगनू

अंक 2 अप्रैल–जून 16

संपादक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

नमस्कार,

जुगनू का यह दूसरा अंक प्रकाशित करते हुए हमें अति प्रसन्नता हो रही है। साल के दूसरे त्रैमास में प्रकाशित जुगनू के दूसरे संस्करण को हमनें मुख्यतः **बाल पंचायत** पर केन्द्रित किया है। बच्चा सही राह पर चलकर अपना जीवन संवार सके इसके लिए जरूरी है कि उन्हें सही समय पर मार्गदर्शन एवं गुणात्मक शिक्षा मिल पाए। यह सर्वविदित है कि बच्चे बहुमुखी प्रतिभाओं के धनी होते हैं। हर बच्चे में जन्मजात प्रतिभा ,रूचि होती है, बस जरूरत उस दबी प्रतिभा को प्रोत्साहित करने की होती है। बच्चे अपनी प्रतिभा के बल पर स्कूल, दोस्तों व समाज में अपनी एक अलग पहचान बना सकते हैं। जैसे कोई बच्चा बढ़िया गाना जानता है तो किसी को चित्रकारी आती है। कोई नृत्य में माहिर है तो कोई भाषण बड़ा अच्छा देना जानता है और कोई क्रिकेट का मास्टर है। ये रूचियां उन्हें अतिरिक्त ऊर्जा देती हैं। बच्चों में छिपी प्रतिभाओं को निखारने में परिवार, समुदाय व गुरूओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चों को सकारात्मकता मिले तो उनके विकास की दर बढ़ सकती है, इसके विपरीत अगर इन रूचियों/प्रतिभाओं को दबाने से बच्चों का व्यक्तित्व कहीं अधूरा सा रह जाता है। बड़वानी जैसे आदिवासी अंचल में बच्चों की बहुत सारी प्रतिभाओं को उभरने का मौका ही नहीं मिल पाता क्योंकि परिवार, समुदाय या विद्यालय के स्तर पर इस तरह का वातावरण ही नहीं मिलता।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए **पहल जन सहयोग विकास संस्थान** ने अपने **बाल पंचायत** के माध्यम से बड़वानी के बच्चों की इन्हीं दबी छुपी प्रतिभा और बाल अधिकारों को एक मंच देने का प्रयास किया है। बाल पंचायत में बच्चों की आवाज़ को आम आवाज़ बनाने के लिये बैठकों व गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को बोलने, खेलने व अपने सपनों को उड़ान देने के साथ–साथ समस्याओं की पहचान कर उसे हल करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है। इस प्रक्रिया से एक ओर जहां बच्चों की रूचियां उभरती है एवं उनकी प्रतिभा और निखरने की संभावना बढ़ती है वहीं दूसरी तरफ इन सबके बीच लड़ाई–झगड़ों, बुरी आदतों से अपने आप दूरी बन जाती है जो इस उम्र में सबसे बड़ा खतरा होता है।

पहल द्वारा संचालित **सम्बल परियोजना** के अंर्तगत गठित बाल पंचायत का बेहद कम समय में ही बच्चों के जीवन में सकारात्मक परिणाम दिखाई देने लगे हैं। इसके लिए सम्बल की पूरी टीम, समुदाय एवं बच्चे बधाई के पात्र हैं। परियोजना क्षेत्र के संबंधित घटक आपसी समन्वय से अपने गांवों के बच्चों के जीवन को बेहतर बनाने के लिये प्रयासरत हैं, जो कि परियोजना की सफलता के लिये अच्छा संकेत है। **जुगनू** के पिछले अंक को मिली सराहना को ध्यान में रखते हुए इस अंक को और अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास किया गया है। आशा है कि जुगनू का यह अंक आपको पसन्द आएगा। इस अंक के बारे में आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी। हम उन सभी लोगों का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं जिनका इस प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से योगदान रहा है। इस अंक के बारे में आपके बहुमूल्य सुझाव सादर आमंत्रित है...

संपादक मंडल

पहल जनसहयोग विकास संस्थान

एक नज़र में...

हमारा सपना

समाज में
जेन्डर के आधार पर
भेदभाव व
इससे उपजी हिंसा
समाप्त हो .....

हम चाहते हैं

भेदभाव व हिंसा के खिलाफ वातावरण निर्माण करना। ताकि सभी अपने अधिकारों व विकास के तमाम अवसरों तक पहुंच सकें, उपयोग करें व फायदा लें। जिससे फिर किसी महिला या बच्चे को जुल्म का शिकार न बनाया जा सके।

हमारी मंज़िल

भेदभाव रहित.....
हिंसा रहित.....
भय रहित.....
स्वस्थ, सुंदर, सुरक्षित
एवं
समता मूलक समाज

हमारे रास्ते

- ◆ क्षमता वर्धन
- ◆ जानकारी का प्रचार प्रसार
- ◆ नेटवर्किंग एंड कैम्पेनिंग
- ◆ शोध, दस्तावेजीकरण एवं प्रकाशन
- ◆ काउंसलिंग एवं पुनर्वास

बाल पंचायत

शिक्षा का मूल उद्देश्य होता है व्यक्ति को हर परिस्थिति से निपटने व विपरीत परिस्थितियों में भी बेहतर प्रदर्शन करने में सक्षम बनाना। नवाचारी शिक्षण पद्वति का लक्ष्य उन्हें समाज के मूल्यों, परम्पराओं को समझने तथा समाज के अन्य लोगों, सदस्यों के साथ समन्वय बिठाना, सहभागिता, सम्मान की भावना के उच्चतम विकास पर बल देते हुए बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है। इस प्रक्रिया में बच्चे अपने आसपास के वातावरण व समाज को सशक्त बनाने और व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से चलाने में अपनी भूमिका निभाने के लिए आगे आना सीखते हैं। **बाल पंचायत** की अवधारणा के पीछे **पहल जन सहयोग विकास संस्थान** की यही मंशा रही है कि बच्चे अपनी जिम्मेदारी को संवेदनशीलता से लेने के लिए आगे आएं, उनमें परिवेश को समझने की दृष्टि विकसित हो तथा वे बाल सुलभ प्रवृत्तियों के साथ सुदृढ़ नागरिक बनने की संभावनाओं के बीच पढ़ें। बाल पंचायत की बैठकों में वे प्रतीकात्मक रूप में ही सही, लोकतांत्रिक शासन पद्धति की बारीकियों को समझ पाएं ऐसे प्रयास किए जा रहे हैं। बाल पंचायत में विभिन्न गतिविधियों के दौरान बच्चे लोकतांत्रिक मूल्यों को ग्रहण करते है जिससे भावी जीवन में एक अच्छे नागरिक व इंसान बनने की संभावनाओं को बल मिलता है।

बाल पंचायत में सीखने के अवसर

- बाल पंचायत की बैठकों में जब बच्चे एक साथ बैठते हैं और आपस मे अपने अनुभवों का आदान प्रदान करते है तो अपनी बातों को सलीके से रखना व दूसरों की बातों को सुनना सीखते है। इस प्रक्रिया से उनमें विश्लेषण क्षमता, भाईचारा व आत्मविश्वास बढ़ता है।
- बाल पंचायत की बैठकों के दौरान बच्चों को विभिन्न किताबों में गीत, कहानी, कविता आदि पढने का मौका मिलता है। साथ ही अपने गॉव की समस्या, समसामयिक मुद्दों, उसके लिए किए जा सकने वाले प्रयासों के विषय मे उनके साथ चर्चा की जाती है। इस प्रक्रिया से वे जिज्ञासा, समझदारी व दूरदर्शिता की परख करना सीखते हैं।
- बाल पंचायत की विभिन्न गतिविधियों से जुडकर उनमें नेतृत्व क्षमता का विकास होता है।
- कई तरह के ग्रामीण खेलों में बच्चे बाल पंचायत के मंच से भाग लेते है। इस तरह उन्हें अपने अन्दर छुपी हुई प्रतिभा को पहचानने और अपने अन्य साथियों से तालमेल बिठाने का अवसर मिलता है। इस प्रक्रिया में बच्चों के भीतर धीरे–धीरे नेतृत्व व अनुशासन दोनों गुण विकसित होते हैं।

बाल पंचायत यानि क्या ?

बाल पंचायत यानि बच्चों की पंचायत है। जिसमें एक बाल सरपंच, उपसरपंच व पंच होते है। यह बाल पंचायत ग्राम पंचायत के समान ही होती है। सचिव का काम भी बाल पंचायत के एक सदस्य द्वारा किया जाता है। इस पंचायत में मुख्य तौर पर बच्चों से संबंधित मुद्दों पर कार्य किया जाता है।

बाल पंचायत के उद्देश्य

- बच्चों में नेतृत्व क्षमता का विकास करना।
- बच्चों में सामूहिक निर्णय की प्रक्रिया की समझ विकसित करना।
- बच्चों में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं तथा मूल्यों के प्रति समझ बनाना।
- बच्चों को जिज्ञासु तथा क्रियाशील बनाना।
- बच्चों मे झिझक, डर दूर करना तथा आत्म विश्वास बढ़ाना।
- समुदाय के रीति रिवाजों व पारंपरिक मूल्यों पर सकारात्मक पक्षों की समझ विकसित करना।
- बच्चों में संगठन, एकता, भाईचारा तथा एक दूसरे के सम्मान की भावना बढ़ाना।
- नागरिक शाखा के पाठ्यक्रम मे आने वाली लोकतांत्रिक प्रणाली के विभिन्न मुद्दों को क्रियान्वित रूप मे सीखना व समझना।

बाल पंचायत के कार्य

बाल पंचायत के मुख्य कार्य शाला प्रबंधन की देखरेख करना होता है। इसमें शिक्षको का नियमित रूप से विद्यालय में आना, नियमित रूप से विद्यालय परिसर में लगे पेड़–पौधों को पानी देना, वर्षा जल संग्रहण, टंकी को साफ करना व उसका उपयोग सुनिश्चित करना, विद्यालय के सभी बच्चों का नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करना, खेल सामग्री का होना सुनिश्चित करना, मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था को देखना आदि शामिल है। बाल पंचायत, गाँव में आने वाली योजनाओं जैसे आंगनवाड़ी से दिये जाने वाले लाभ, मध्यान्ह भोजन,छात्रवृत्ति, टीकाकरण, कुपोषित बच्चों के लिए दिए जाने वाले पोषक आहार के बारे में जानकारी का प्रचार–प्रसार भी करती है।

बाल पंचायत बाल सुरक्षा से जुडी सभी समस्याओं जैसे बालश्रम, बालविवाह एवं बाल दुर्व्यवहार, स्कूल या गाँव में बाल संरक्षण से जुड़े सभी मुद्दों पर कार्य करेगी। बाल पंचायत स्कूल या गाँव में बाल अधिकारों की जानकारी मुहैया कराना सुनिश्चित करेगी। इस हेतु बाल सभा के सदस्य संबंधित सरकारी विभाग या संस्था से बच्चों के अधिकार की एवं बच्चों के लिए चलाई जा रही सरकारी एवं गैर सरकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त करेगी। बाल पंचायत बच्चों को स्कूल में बगैर भेदभाव के समान अवसर प्राप्त होने की पैरवी करेगी, अगर किसी बच्चें के साथ भेदभाव हुआ तो यह उस मामले को प्रबंधन के सामने उठायेगी। बाल पंचायत अपने ही गाँव में आ रही समस्याओं को लेकर छोटे–छोटे नाटक, गीत, लोकगीत आदि तैयार करेगी और अपने गाँव स्तर पर संदेश दे सके। बाल पंचायत समय–समय पर गाँव के सभी बच्चों के साथ मिलकर वाद–विवाद प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, खेलकूद प्रतियोगिता और सांस्कृति कार्यक्रम का आयोजन करेगी। जिससे बच्चों में नेतृत्व क्षमता, कौशल विकास एवं जानकारी के स्तर में वृद्धि होगी।

पहल बच्चों के सर्वांगीण विकास की दिशा में सबकों गुणवत्तापूर्ण शिक्षा,बेहतर पोषण एवं आजीविका के अवसर उपलब्ध करवानें के लिए पिछले 11 वर्षो से विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है। इसको ध्यान में रखते हुए वर्ष 2014 में बड़वानी के 10 गांवों में बच्चों के सर्वांगीण विकास पर कार्य करने हेतु बच्चों एवं अभिभावकों के साथ बैठको का आयोजन करते हुए गाँव स्तरीय बाल समूह का गठन किया गया। बच्चों द्वारा ग्राम पंचायत के जनप्रतिनिधियों के साथ सामूहिक चर्चा एवं गतिविधियों के दौरान बाल पंचायत गठन का निर्णय लिया गया। बाल पंचायत से ग्राम पंचायत के गठन की प्रक्रिया, कार्यप्रणाली एवं स्थानीय समस्याओं को ग्राम सभाओं के माध्यम से सामूहिक निर्णयों से समाधान करने की प्रक्रिया के प्रति बच्चों में जिज्ञासा और समझ पैदा होती है। बाल पंचायतों द्वारा विभिन्न समस्याओं के लिए समय–समय पर बाल कोरम बैठक, बाल ग्राम सभा आयोजित कर विभिन्न मुद्दों पर सामूहिक निर्णय लेकर नियमित रूप से कार्य किया जाता है। पहल वर्तमान में 10 गांव में बाल पंचायतों के माध्यम से बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रयत्नशील है।

बाल पंचायत का विवरण चार्ट

क्र.	बाल पंचायत व गांव का नाम	बाल सदस्यों की संख्या			गतिविधि
		लड़का	लड़की	कुल	
1	अधिकार बाल समूह, दवाना	13	8	21	स्कूल चलो अभियान, पौधारोपण, विश्व शौचालय दिवस, बाल अधिकार के स्लोगन दीवार लेखन।
2	उद्देश्य समूह, मंडवाड़ा	7	13	20	बच्चों को पोलियो बूथ ले जाना, लायब्रेरी का संचालन।
3	हंसते–हंसते बढ़ते कदम समूह, अंजड़	9	13	22	बचत करना शुरू, बच्चों को आंगनबाड़ी से जोड़ा, बाल अखबार निकालना, शाला त्यागी बच्चों को स्कूल पहुंचाना, बाल श्रम विरोध हेतु नुक्कड़ नाटक की तैयारी
4	आदर्श बाल समूह, सेगांवा	7	9	16	पोलियों दवा पिलाई, सीसी रोड के लिये आवेदन, पर्यावरण संरक्षण के प्रयास और पौधारोपण।
5	प्लस ग्रुप, बोरलाय	12	11	23	बचत करना शुरू, बाल अखबार निकालना, शाला त्यागी बच्चों को स्कूल पहुंचाना, पौधा रोपण, खेल महोत्सव का आयोजन, खेल के मैदान के लिये पंचायत में आवेदन।
6	लक्ष्य समूह, सजवानी	33	17	40	खेल दीवार का अनावरण, खेल के मैदान के लिये पंचायत में आवेदन ,आंगनवाड़ी की सफाई व पुताई, पानी टंकी की सफाई, बाल विवाह रोकने के लिये नुक्कड़ नाटक, मतदाता जागरूकता व जल दिवस पर कार्यक्रम एवं गणेश उत्सव पर मिट्टी की मूर्ति की स्थापना।
7	बाल पहल, कालाखेत	11	7	18	बच्चों को आंगनवाड़ी जाने के लिये प्रेरित करना, नशामुक्ति पर नुक्कड़ नाटक का प्रदर्शन, बाल अधिकार अभियान पर पारंपरिक उत्सव का आयोजन
8	जगरूक समूह, चिखलिया	10	6	16	शौचालय की सफाई, बचत करना शुरू, बाल अखबार निकालना, शाला त्यागी बच्चों को स्कूल पहुंचाना, पौधा रोपण, पोलियो की दवा पिलाई।
9	प्रयास समूह, तलवाड़ा बुजुर्ग	14	6	20	कचरा पेटी का निर्माण कर गांव में वितरण व जागरूकता, बचत करना शुरू, बाल अखबार निकालना, शाला त्यागी बच्चों को स्कूल पहुंचाना, पौधा रोपण, आंगनवाड़ी व सामुदायिक भवन की साफ–सफाई, ग्राम उदय में शौचालय व जल के लिये आवेदन।
10	बाल एकलव्य समूह, बिजासन	6	7	13	बाल अखबार की रचना, हर माह बाल सभा का आयोजन, महिलाओं को साक्षर होने के लिये प्रेरित किया एवं शौचालय बनवाने की प्रेरणा के लिये नुक्कड़ नाटक।

मेहनत रंग लाई

बड़वानी जिले के नगर पंचायत अंजड़ के सुसाड़, गायबेड़ा व नवलपूरा फलिये के बच्चों के साथ बैठकों के माध्यम से बाल पंचायत का गठन किया गया। बैठक के आरंभ में यह पता चला कि बच्चे अपना परिचय भी सही तरीके से दे नहीं पाते हैं। तो तय हुआ कि शुरूआत यहीं से की जाए। सबसे पहले सभी सही तरीके से अपना व अपने समूह, संस्था का परिचय देना सीखेंगे। बच्चों में शर्म, झिझक व डर इस कदर भरा हुआ था कि उच्छे से बोलना तो दूर बोलने को ही तैयार नहीं होते थे। बस मुंह पर हाथ रखकर या तो हंसने लगते या शर्माकर दोनों हाथों से अपना चेहरा ढांक लेते। सहजकर्ता के लिये यह एक बड़ी चुनौती थी क्योंकि बोले बगैर तो गतिविधियों को बढ़ाया भी नहीं जा सकता था। तब खेल, कहानियों, पुस्तकों और विभिन्न गतिविधियों से इन बच्चों की झिझक टूटने लगी। कुछ बच्चे खुलकर बोलने लगे तो शेष भी अपनी बात रखने लगे। खेल ने बच्चों के मन से डर को दूर भगा दिया फिर तो बैठक में इन्हीं की आवाज़ गुंजने लगी। लगातार अभ्यास से बच्चों का डर व झिझक कम हुआ तो वे अपना परिचय पूरे आत्मविश्वास से देने लगे। अब वो समय था जब चुनाव के माध्यम से बाल पंचायत का गठन करना था। पूरी तैयारी के साथ अंजड़ में चुनाव संपन्न हुआ और बाल पंचायत का गठन किया गया। बाल पंचायत की बैठकों के कारण अब बच्चे सामूहिक तौर पर निर्णय लेना, बातों को समझना, प्रश्न पूछना, विश्लेषण करना व नेतृत्व करना सीख रहे हैं। उनका आत्मविश्वास तो बढ़ा ही है बल्कि वे दूसरे बच्चों को भी सलाह देते हैं वो भी बिंदास तरीके से।

''सबसे पहले पढ़ाई की याद, बाकी सब उसके बाद।''

9 साल की मस्तमौला **मनु** को न स्कूल जाना पसंद है ना ही पढ़ना। बस दिन भर यहां वहां घूमना और लड़कों के साथ ताश–कंचे खेलना, यही सब उसकी दिनचर्या का हिस्सा था। हाँ और घर की बकरिया भी तो चरानी होती था। पूछो तो कहती ''दूसरी लड़कियों की तरह घर का काम मुझसे नहीं होता, बाकी लड़कों की तरह....., कहीं भी जाओ, कुछ भी करो, घूमना–फिरना, खेलना ये करवालो। लड़कों को कितना अच्छा है, न किसी बात की रोकटोक और न ही कोई बंदिश। मैं भी उनकी तरह ही आजाद रहना चाहती हूं बस।'' पर आखिर एक बार बाल पंचायत की बैठक में जब उससे खुलकर बातें हुई तो वह बैठक में आने के लिये तैयार हो गई। बैठक में आती, बैठती और बातें सुनती।

एक बार लायब्रेरी का दिन था, सारे बच्चे अपनी–अपनी पसंद की किताब लेकर पढ़ रहे थे। मनु पहले तो देखती रही फिर उठकर जाने लगी। उससे पूछा गया कहां जा रही हो ? पहले तो कहा बकरी चराने, फिर बच्चों ने उसे कहा बकरी तो अभी ही घर छोड़कर आई है फिर ? उसने कहा मुझे पढ़ना नहीं आता तो बैठकर क्या करूं ? सहजकर्ता ने उसे कहा आओ हम दोनों मिलकर प्रयास करते हैं और फिर खुद एक किताब पढ़कर मनु को सुनाया। फिर पूछा कैसी लगी तो मनु मुस्कुराते हुए बोली दीदी एक और पढ़ें। धीरे मनु को पढ़ने में मज़ा आने लगा। फिर उसे समझाया गया कि खेलकूद के साथ–साथ पढ़ाई भी जीवन में आगे बढ़ने के लिये बहुत जरूरी है। सारे दोस्तों को पढ़ते, खेलते देखकर उसे अहसास हो गया कि पढ़ना कितना जरूरी है। उसके परिवार वालों से भी बात की, वे भी उसे स्कूल भेजने को तैयार हो गये। अब मनु नियमित तौर पर स्कूल जाने लगी है और छुट्टी के नाम पर हंसकर कहती है **''छुट्टी, ना बाबा, छुट्टी–वुट्टी नहीं करनी, पहले करें पढ़ाई को याद, बाकी सब उसके बाद।''** बाल पंचायत की बैठकों में आते–आते उसने ताश खेलना भी छोड़ दिया है और मन लगाकर पढ़ाई करने लगी है।

मिट गई दूरी अपने पराये की

बड़वानी से 16 किमी दूर अंजड़ में बाल पंचायत की शुरूआती बैठकों में बच्चे डरे सहमे से, चुप से रहते थे। पूरा परिचय देना तो दूर अपना नाम भी बताने में शरमाते थे। झिझक ऐसी कि लगता जैसे कोई नई नवेली बहू अपने ससुराल वालों के सामने पहली बार आई हो। हरभजन, तेजपाल सिंह, आरती, अनमोल सिंह व सिमरन जैसे बच्चों की बात दूसरे बच्चों से थोड़ी अलग भी है क्योंकि ये हैं सिकलीकर बच्चे। सिकलीकर जिनका मुख्य काम देशी हथियार बनाना है। यहां बड़ों के साथ–साथ बच्चे भी ये काम बखूबी जानते हैं।

इनको गांव के लोग अपने से अलग मानते हैं इसलिये ये अपने समुदाय के अलावा बाहरी लोगों के साथ मिलने जुलने से स्वयं भी कतराते हैं। पर बाल पंचायत के गठन के दौरान इस बात का खासतौर पर ध्यान रखा गया कि समूह में गांव के सभी बच्चों का बराबरी से प्रतिनिधित्व हो। शुरू–शुरू में इन बच्चों को बैठक तक लाना भी कठिन था पर जैसे वक्त कभी एक जैसा नहीं रहता वैसे ही लगातार बैठकों से ये बच्चे भी अब खुलने लगे। अपनी बात रखना, मनवाना और काम करवाना सीख रहे हैं। अपनी जरूरतों–अधिकारों को समझ रहे हैं इसलिये इससे जुड़े सवाल भी उठाने लगे हैं। अब सारे बच्चे एक साथ उठते बैठते और खेलते हैं अब कोई नहीं कहता कि तुम अपनी बस्ती में जाकर खेलो। दूरियां मिट गई, सब अपने बन गये तो मस्ती भी चौगुनी हो गई है। सम्बल परियोजना का मुख्य बिंदु स्वास्थ्य, शिक्षा और आजीविका सुनिश्चित करना है पर इसका आधार बाल अधिकार पर टिका है क्योंकि ये तीनों ही मुद्दे बच्चों के जीवन को सीधे प्रभावित करते हैं। जाति या काम के नाम पर भेदभाव को मिटाना बाल पंचायत के कारण संभव हो पाया जिससे इन बच्चों के विकास के रास्ते भी खुलते नज़र आ रहे हैं।

विश्व शौचालय दिवस पर प्रयास

अभी तक समय–समय पर स्वास्थ्य के संबंध में चर्चा के दौरान गांव के लोगों से घरों में शौचालय बनाने की बात तो कही जाती रही है। पर इस बार विशेषकर 19 नवंबर को विश्व शौचालय दिवस के अवसर पर बाल पंचायत व युवा समूह के सदस्यों ने चिखल्या के बंदारा फल्या में एक कार्यक्रम का आयोजन किया और लोगों का इसका महत्व समझाया। सबसे पहले रैली के माध्यम से बच्चों ने घर–घर में संदेश दिया कि खुले में शौच जाने से क्या नुकसान हो सकते हैं। इसके बाद गांव की बंद पड़ी सार्वजनिक शौचालय की सफाई की जो कि गंदगी के चलते लम्बे समय से बंद पड़ी थी। सभी सदस्यों ने सफाई करके शौचालय को पुनः उपयोग लायक बनाया। अंत में फल्या के सभी लोगों ने शौचालय का नियमित उपयोग करने व स्वच्छता बनाये रखने का संकल्प लिया।

राज एक्सप्रेस

पहल की पहल पर शौचालय व पेशाब घर के खुले ताले

संस्था व बाल पंचायत सदस्यों ने समस्या को लेकर सौंपा था आवेदन

विश्व शौचालय दिवस पर की सफाई

बच्चों ने सरपंच से कहा ''खेल का मैदान हमारा हक है''

भारत ग्राम उदय अभियान के तहत गांव के लोग बढ़चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। ऐसे में भला बच्चे कैसे पीछे रहते उन्होंने भी पंचायत प्रतिनिधियों के समक्ष उपस्थित होकर गांव में खेल का मैदान बनाने के लिये आवेदन दिया। बच्चों ने ग्राम सरपंच, नोडल अधिकारी व अन्य पंचो के सामने बताया कि गांव में कहीं भी बच्चों के खेलने के लिये मैदान नहीं है जिससे हम सही तरीके से खेल का आनंद नहीं उठा पाते और इससे हमारा शारीरिक व मानसिक विकास भी धीमा हो रहा है। खेल का मैदान होने से हम बच्चे ठीक से खेल पायेंगे तो हमारे विकास की गति बढ़ जायेगी और हम नयी–नयी बातें सीखेंगे, हमारा स्वास्थ्य अच्छा होगा तो हम बीमार भी कम पड़ेंगे। बच्चों की बातों से सरपंच व नोडल अधिकारी पूरी तरह से सहमत हुए और कहा कि हमने इस तरह से नहीं सोचा था इसलिये कभी इस पर काम भी नहीं किया। पर अब आपकी बातों से उन्होंने वादा किया कि वे जल्द से जल्द इसे पूरा करने का प्रयास करेंगे। बाल पंचायत के 23 सदस्यों के पहल के साथी हितेश व उषा भी मौजुद थे।

बल श्रम विरोध दिवस

किसी भी क्षेत्र में बच्चों द्वारा अपने बचपन में दी गई सेवा को बालश्रम कहते हैं । दरअसल बचपन में हर बच्चा श्रम से परे रहकर अपनी टोली के बच्चों के साथ खेलना, मस्ती करना, माता–पिता का लाड़ पाना चाहते हैं। साथ ही यही उम्र है जब बच्चा नई–नई बातें सीखना चाहता है और पढ़ना–लिखना चाहता है। पर माता पिता की मजबूरी, कमजोरी या गरीबी या अन्य परिस्थितियों के चलते बच्चे बचपन को खोकर श्रम की दुनिया में कदम रखते हैं जिसे हम बाल श्रम कहते हैं। बालश्रम बच्चे के शारीरिक, मानसिक व सामाजिक हर तरह के विकास को बाधित करता है। साथ ही बालश्रम एक अपराध है। बालश्रम निषेध व नियमन अधिनियम 1986 की धारा 23 के तहत खतरनाक कामं में बच्चों को लगाना प्रतिबंधित है। इसके अनुसार बच्चों को इन प्रतिबंधित कार्यों पर लगाने वाले को सजा भी हो सकती है। बालश्रम किसी भी रूप में स्वीकार्य नहीं होना चाहिये। इसी विचार के प्रसार के लिये बाल श्रम निषेध दिवस के अवसर पर 12 जून को बाल पंचायत के बच्चों ने नारे लगाते हुए पोस्टर के माध्यम से लोगों को बाल श्रम के मुद्दे के प्रति जागरूक किया। सभी लोगों को आग्रह भी किया कि वे बचपन न छीनें बल्कि हर बच्चे को पनपने और निखरने का मौका दें।

बाल पंचायत और युवा समूह का मिलन समारोह

सम्बल परियोजना के आरंभ से ही सभी 10 गांव में बाल पंचायत व युवा समूहों का गठन होने लगा था। बैठकों व विभिन्न गतिविधियों के द्वारा यह समूह धीरे–धीरे गति पकड़ने लगे। कहीं पोलियो बूथ पर बच्चों को लाना तो कहीं बाल अधिकर के नारे लेखन। कहीं आंगनबाड़ी की सफाई तो कहीं पौधा रोपण। खूब सारे काम और धमाल। पर एक दूसरे के बारे में केवल भैय्या–दीदी से ही सुना पर मिले कभी नहीं। ऐसे में तय हुआ कि सभी समूहों को एक जगह मिलना चाहिये। सब पहुंच गये बावनगजा। बावनगजा बड़वानी का दर्शनीय स्थल है। यहां सारे बच्चे मिले, एक दूसरे से परिचय हुआ। सबने नये–नये काम के बारे में सुना। नई प्रेरणा ,नये दोस्त और खूब सारी मस्ती के बीच बच्चों ने संगठन और एकता का महत्व समझा। पूरे दिन एक साथ बिताने के बाद ढेर सारी सीख और वादों व नये काम के प्रण के साथ सब विदा हुए।

मैं अंजड़ के बाल पंचायत का सरपंच हूं। बाल पंचायत के कारण हमारे गांव में बहुत बदलाव आया है। जो बच्चे पहले स्कूल नहीं जाते थे अब वे रोज स्कूल जा रहे हैं। अपने स्वास्थ्य को लेकर जागरूक हुए हैं। हम सब मिलकर अपने गांव को पॉलीथीन मुक्त बनाने का प्रयास कर रहे हैं और साथ ही पर्यावरण के बचाव के लिये पौधे भी लगा रहे हैं। बाल पंचायत से जुड़कर हमें नई जानकारियां मिल रही हैं जिससे हमें आगे बढ़ने में मदद मिली है।

– कुणाल दरबार,
सरपंच बाल पंचायत गायबेड़ा, अंजड़

पहले हमारे गांव में लड़के और लड़कियों के लिये सब अलग–अलग था। उठना–बैठना और खेलना भी। पर जब से हम बाल पंचायत के सदस्य बने हैं, सब बदल गया है। अब तो हमारे गांव में लड़के और लड़कियां एक साथ खेलते हैं, एक साथ बैठक में बात और मस्ती भी करते हैं। अब हर काम हम मिलकर करते हैं। बाल पंचायत में हर बात सबकी सहमति से ही तय करते हैं।

– आकाश, बोरलाय

जबसे हमारे गांव में बाल पंचायत की बैठकें शुरू हुई हैं हमारे बच्चों में बदलाव दिखाई देता है। पहले हम पढ़ने के लिये कहते–कहते थक जाते फिर भी बच्चे नहीं पढ़ते या थोड़ी देर के लिये पढ़ते थे। अब तो खुद ही समय से पढ़ने बैठते हैं, खेलने भी जाते हैं और बैठक से आकर नई–नई बात भी बताते हैं। हमको सिखाते हैं कि हमें पॉलीथीन का उपयोग नहीं करना चाहिये क्योंकि इससे पर्यावरण को नुकसान होता है, ज्यादा पौधे लगाना चाहिये आदि। पहले हमारे गांव के आंगनबाड़ी में ज्यादा बच्चे नहीं जाते थे पर अब वहां भी पहल के प्रयास से ज्यादा बच्चे जा रहे हैं। अपने स्वास्थ्य को लेकर भी सचेत हुए हैं पहले तो हाथ धोना कोई जरूरी नहीं था पर अब खेलकर आते ही हाथ मुह धोकर ही खाने बैठते हैं। पहले मेहमान आने पर घर से बाहर भाग जाते थे कि कही बात न करनी पड़े। और अब इतना बोलते हैं कि कहना पड़ता है जाओ तुम खेलो अब हमें बात करनी है। मुझे विश्वास है कि पहल के कारण हमारे बच्चों को बेहतर जीवन मिलेगा।

– बबीता दरबार

मेरा नाम नंदिनी है। मैं पहले बहुत कम बोलती थी। पर जबसे बैठकों में बार–बार परिचय कराया गया। खेल खेला और किताबें पढ़कर बात की तो अब मुझे बोलने में डर नहीं लगता। अब किसी से भी बात करने में हिचकिचाती नहीं हूं बल्कि बिंदास अपनी बात कहती हूं। मुझे बाल पंचायत की बैठक का इंतजार रहता है क्योंकि वहां हर बार कुछ नया मिलता है।

– नंदिनी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

पहल जन सहयोग विकास संस्थान

मुख्य कार्यालय : 65, जानकी नगर मेन, इंदौर (म.प्र.) 452001

शाखा – ✦ 11, जेमन कॉलोनी, महेन्द्र टॉकीज़ रोड, बड़वानी (म.प्र.) ✦ 2, शाही बाग, उस्मान पटेल गेट, खजराना, इन्दौर (म.प्र.)

फोनः 0731-4222197, मोबाईलः 9425054111 | E-mail : pahal6867@gmail.com | Website : www.pahalindore.org